इकाई 10 रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 रुद्रदामन का जीवनवृत्त

10.3 रुद्रदामन की विजययात्रा एवं राज्यविस्तार

10.4 रुद्रदामन की शासनव्यवस्था

10.5 रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख का परिचय

10.6 रुद्रदामन का उत्कीर्ण जूनागढ़ शिलालेख

10.6 रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख का साहित्यिक महत्व

10.7 सारांश

10.8 शब्दावली

10.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.10 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- रुद्रदामन के जीवनवृत्त के बारें में जान सकेंगे।
- रुद्रदामन की विजययात्रा एवं राज्यविस्तार के बारें में जान सकेंगे।
- रुद्रदामन की शासनव्यवस्था के बारें में जान सकेंगे।
- रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- रुद्रदामन का उत्कीर्ण जूनागढ़ शिलालेख के बारें में जान सकेंगे।
- रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख का साहित्यिक महत्व के बारें में जान सकेंगे।
- प्रयुक्त तकनीकि शब्दावली से परिचित हो पायेंगे।

10.1 प्रस्तावना

रुद्रदामन का जूनागढ़ शिलालेख जूनागढ़ से 2 किलोमीटर पूर्व की ओर जूनागढ़ गिरनार मार्ग पर पर्वत की उसी बड़ी शिला पर उत्कीर्ण है, जिस पर मौर्य सम्राट् अशोक और गुप्तवंशीय स्कन्दगुप्त के अभिलेख भी उत्कीर्ण हैं। यह अभिलेख छोटी–बड़ी 20 पंक्तियों में पूरा हुआ है। इसकी भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी है। इस अभिलेख के काल का ठीक–ठीक निर्धारण कर पाना कठिन है। किन्तु इसी अभिलेख में भयंकर बाढ़ और तूफान के कारण सुदर्शन तालाब के बांध के टूटने की घटना को महाक्षत्रप रुद्रदामन के 72वें वर्ष में मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा को घटित बताया गया है। विद्वानों का मत है कि यह वर्ष रुद्रदामन के शासनकाल का नहीं, अपितु शक् संबत्

का है। अतः इस घटना का काल नवम्बर 150 ई. हुआ। दरार बहुत गहरी थी और सारा जल निकल जाने के कारण तालाब बिल्कुल सूख गया। बाँध के पुनः संस्कार में एक या अधिक से अधिक दो वर्ष लग गये होंगे। अतः इस अभिलेख की तिथि 151 अथवा 152 ई. स्वीकार की जा सकती है। इस इकाई में रुद्रदामन का जीवनवृत्त, रुद्रदामन की विजययात्रा एवं राजविस्तार, शासनव्यवस्था, जूनागढ़ शिलालेख, उत्कीर्ण जूनागढ़ शिलालेख एवं उसके साहित्यिक महत्व का अध्ययन किया जायेगा।

10.2 रुद्रदामन का जीवनवृत्त

रुद्रदामन के गिरनार शिलाभिलेख का विशेष ऐतिहासिक महत्व है। इस अभिलेख से हमें रुद्रदामन के विषय में इतनी जानकारी मिलती है, जितनी किसी भी क्षत्रप शासक के विषय में किसी भी स्रोत से उपलब्ध नहीं होती। इस अभिलेख से रुद्रदामन के पूर्वजों और उनकी वंशपरम्पराओं पर विशेष प्रकाश पड़ता है। रुद्रदामन के पितामह का नाम राजा महाक्षत्रप स्वामी चष्टन और पिता का नाम राजा क्षत्रप जयदामन था। पितामह चष्टन को महाक्षत्रप की उपाधि से और पिता जयदामन को क्षत्रप की उपाधि से विभूषित बताया गया है। रुद्रदामन स्वयं महाक्षत्रप की उपाधि से विभूषित हैं। अभिलेख में वर्णित '**आगर्भात्प्रभृत्यविहतसमुदितराजलक्ष्मी**' पद से यह ध्वनित होता है कि रुद्रदामन के पिता की मृत्यु उसके जन्म से पूर्व ही हो चुकी थी। रुद्रदामन ने जो कि अपने दादा चष्टन के शासनकाल में कुछ समय क्षत्रप भी रहा था, उसकी मृत्यु के पश्चात् स्वयं महाक्षत्रप की उपाधि ग्रहण की (**स्वयमधिगतमहा–क्षत्रपनाम्ना**)। इससे ज्ञात होता है कि रुद्रदामन अपने शासन–काल के अन्त की ओर कुषाणों के आधिपत्य से बिल्कुल मुक्त हो चुका था और कुषाणों की पकड़ अपने साम्राज्य के दक्षिणी प्रान्त पर बिल्कुल ढीली पड़ चुकी थी। चष्टन का मूल नाम कार्द्दमक और उसके पिता का नाम रसमोतिक था। ये विदेशी नाम हैं। रुद्रदामन और उसके पिता जयदामन के नाम शुद्ध संस्कृत नाम हैं। इससे प्रमाणित होता है कि यह शकवंश भारतीय धर्म और संस्कृति से प्रभावित होकर यहाँ की मुख्य सांस्कृतिक धारा का अंग बन चुका था। '**नरेन्द्रकल्यास्वयं वरानेकमाल्यप्राप्तदाम्ना**' पद से स्पष्ट है कि उनके अन्य भारतीय राजाओं के साथ वैवाहिक सम्बन्ध थे। दक्षिणाधिपति सातकर्णि के नाम सम्बन्ध की निकटता का उल्लेख इसी अभिलेख में है।

रुद्रदामन में एक अच्छे प्रशासक के सभी गुण विद्यमान थे। वह दयालु, न्यायप्रिय, वीर, कलाप्रेमी और विद्वान् राजा था। उसने सुराष्ट्र की प्रजा के कष्टों को देखते हुए अपने ही खजाने से धन व्यय करके सुदर्शन झील के बाँध को पुनः बँधवा दिया। उसने प्रतिज्ञा की थी कि युद्ध के सिवाय नर हत्या नहीं करुँगा। वह अपना दाहिना हाथ उठाकर धर्मपूर्वक न्याय की घोषणा करता था। उसने अनेक देशों को जीतकर अपने राज्य में सम्मिलित किया और अनेकों को जीतकर उन्हें उनके शासकों को ही सौंप दिया। **उसके खजाने सोना, चाँदी, रत्न इत्यादि विद्याओं में निष्णात था तथा हाथी,** घोड़े, रथ इत्यादि के संचालन एवं तलवार और ढाल के प्रयोग में प्रवीण था। वह अनेक गुणों से युक्त गद्य–पद्यमयी काव्य की रचना में कुशल था। संस्कृत भाषा के प्रति उसका अनुपम अनुराग था। जबकि तात्कालिक प्रशासक अपने अभिलेख और प्रशस्तियाँ पालि, प्राकृत इत्यादि सामयिक भाषाओं में लिखवाते थे, उसने किंतु यह शिलालेख संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण कराया।

10.3 रुद्रदामन की विजययात्रा एवं राजविस्तार

रुद्रदामन के इस शिलालेख में रुद्रदामन को शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला अनेक प्रान्तों को विजित करके अपने राज्य में सम्मिलित करने वाला और राज्यभ्रष्ट राजाओं को पुनः उनके राज्य पर स्थापित करने वाला बताया गया है। उसे अपनी वीरता के कारण सब क्षत्रियों में प्रसिद्ध और इसीलिए दर्प युक्त और किसी के भी वश में न होने वाले यौधेयों का विनाशक बताया गया है। (**सर्वक्षत्राविष्कृतवीर शब्दजातीत्सेकाविधेयानांयौधेयानां प्रसह्योत्सादकेन**) यौधेय पंचनद प्रदेश के दक्षिणी भाग में सतलुज के तट पर निवास करते थे। आज भी उनके वंशज बहावलपुर (पाकिस्तान) में जोहिया नाम से प्रसिद्ध हैं। वे वहाँ से आगे बढ़कर हरियाणा और उत्तरी राजस्थान के भागों में जा बसे थे। ये शक, यवन इत्यादि जातियों के निरन्तर आक्रमणों से पराजित नहीं हुए। रुद्रदामन का भी उनके साथ युद्ध हुआ होगा। परन्तु ऐसा प्रतीत नहीं होता कि ये रुद्रदामन द्वारा बिल्कुल नष्ट कर दिए गए हों, क्योंकि उसके बाद भी उनके '**जय यौधेयण्स्य**' शब्दों से उत्कीर्ण और कार्तिकेय की प्रतिमा से अंकित तीसरी शताब्दी ई. के ताम्बे के सिक्के मिले हैं।

रुद्रदामन ने दाक्षिणापथ के राजा सातकर्णि को भी आमने–सामने के युद्ध में दो बार पराजित किया था, परन्तु निकट का सम्बन्ध होने के कारण उसका विनाश नहीं किया था (**दक्षिणापथपतेः सातकर्णेः द्विरपि निव्यजिम् अवजित्यावजित्य सम्बन्ध बिदूरतयानुत्सादनात्प्राप्तयशसा**) यह सातवाहन वंशी सातकर्णि कौन सा सातकर्णि था, इस विषय मे विद्वानों के अनेक मत हैं। परन्तु कन्हेडी शिलालेख से पता चलता है कि वसिष्ठीपुत्र सातकर्णि की पत्नी रुद्रदामन की पुत्री थी। इस प्रकार इस शिलालेख में उल्लिखित सातकर्णि या तो वसिष्ठी पुत्र सातकर्णि था या उसका पिता गौतमीपुत्र सातकर्णि था। कुछ के अनुसार यह सातकर्णि वासिष्ठीपुत्र सातकर्णि का भाई और उत्तराधिकारी पुलुमावि था और कुछ के अनुसार उसका पुत्र यज्ञश्री सातकर्णि।

रुद्रदामन ने अपने बल–वीर्य से अनेक देशों को जीतकर अपने राज्य में सम्मिलित किया था। इनके नाम हैं–पूर्वी और पश्चिमी अवन्ति, अनूप देश, आनर्त (गुजरात का उत्तरी भाग), सुराष्ट्र, श्वभ्र (साबरमती नदी का तटवर्ती प्रदेश) मरु (मारवाड़) कच्छ, सिन्ध और सोबीर (सिन्धु नदी के डेल्टे का प्रदेश), कुकुर, अपरान्त (उत्तर–पश्चिमी कोंकण प्रदेश), निषाद देश तथा अन्य कई देश। इस अभिलेख से यह पता नहीं चलता कि रुद्रदामन ने इन देशों को कब और कैसे जीता। यह अनुमान है कि उसने आकर, अवन्ति , अपरान्त, सुराष्ट्र इत्यादि दक्षिणी और दक्षिण पश्चिमी देशों का गौतमीपुत्र सातकर्णि या उसके पुत्र पुलुमावि से जीता होगा। सिन्धु, सौबीर इत्यादि देश को जीतने के उल्लेख से यह अनुमान किया जा सकता है कि इन प्रदेशों को जीतने के लिए उसे कुषाणवंशी कनिष्क के उत्तराधिकारियों से युद्ध करना पड़ा होगा।

इस अभिलेख में रुद्रदामन को भ्रष्टराजप्रतिष्ठापक अर्थात् राज्य से भ्रष्ट हुए राजाओं को पुनः उनके राज्य पर प्रतिष्ठापित करने वाला बताया गया है। इसका तात्पर्य यह है कि रुद्रदामन ने अनेक राजाओं को जीतकर उनके राज्य उनको वापस कर दिए थे, और वह गुप्तवंशी सम्राट् समुद्रगुप्त की तरह उनसे कर वसूला करता था। रैप्सन ने इस कथन का यह अर्थ लिया है कि नाहपान के अधीन जिन प्रान्तीय शासकों को सातवाहनवंशी गौतमीपुत्र सातकर्णि ने राज्यभ्रष्ट कर दिया था, रुद्रदामा ने उन्हें पुनः उनके राज्यों में स्थापित कर दिया।

10.4 रुद्रदामन की शासनव्यवस्था

इस अभिलेख में इस उल्लेख से कि राजा ने नगर और जनपदों के निवासियों के अनुग्रह तथा समस्त आनर्त और सुराष्ट्र के पालनार्थ पलहवजातीय कुलैप के पुत्र अमात्य सुविशाख को यहाँ (आनर्त और सुराष्ट्र) का राज्यपाल नियुक्त किया हुआ था यह पता चलता है कि रुद्रदामन ने अपने राज्य को अनेक प्रान्तों में विभक्त किया हुआ था जो प्रान्तीय शासक के अधीन होते थे। शासन प्रबन्ध को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए उसने मन्त्रि सचिवों (मन्त्रियों) और कर्मसचिवों 'कार्यकारी पार्षद' की व्यवस्था की थी। रुद्रदामन की कर नीति भी अतिव्यवस्थित और उदार थी। अभिलेख में लिखित **'यथावत् प्राप्तैः बलिशुल्कभागैः'** से पता चलता है कि प्रजाओं से मालगुजारी और चुंगी आदि सामान्य कर ही प्राप्त करता था। सेतु के पुनर्निर्माण के लिए भी उसने प्रजाओं से विशेषकर, बेगार और उपहार आदि स्वीकार नहीं किए (**अपीडयित्वा करविष्टिप्रणयक्रियाभिः पौरजानपदं जनम्।**)

10.5 रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख का परिचय

सुदर्शन नामक तालाब गिरिनगर के निकट चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रान्तीय शासक पुष्यगुप्त के द्वारा बनवाया गया था। सम्राट् अशोक के प्रतिनिधि शासक '**तुशासस्फ**' ने इसे प्रणालियों आदि की व्यवस्था से सम्पन्न किया। शक संवत् के 72 वें वर्ष में मार्गशीर्ष मास की कृष्ण प्रतिपदा को अत्यधिक वर्षा के कारण ऊर्जयत् पर्वत के निकलने वाली सुवर्णसिकता, पलाशिनी आदि नदियों में भयंकर बाढ़ आ जाने और तेज तूफान के कारण तालाब के बाँध में गहरी दरार पड़ गई। सारा जल निकल जाने के कारण सुदर्शन तालाब मरुस्थल की तरह दुर्दर्शन हो गया। सर्वगुण सम्पन्न, न्याय–प्रिय, कला और साहित्य प्रेमी, विजयशील रुद्रदामन ने प्रजाओं से कर, उपहार और बेगार लिए बिना तीन गुना मजबूती और विस्तार के साथ इस बाँध को पुनः बँधवा दिया। राजा के मत्रियों और कार्यसचिवों के हतोत्साह हो जाने के कारण प्रजाओं में हाहाकार मच जाने पर सुराष्ट्र और आनर्त के पालन के लिए अमात्य सुविशाख के द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ।

गिरनार पर्वत पर जितने भी अभिलेख उत्कीर्ण हुए हैं, वे सभी किसी न किसी रूप में सुदर्शन झील से अवश्य सम्बन्धित हैं। अशोक ने अपना शिलालेख अपने पितामह चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा निर्मापित इस झील के निकट इस महत्वपूर्ण स्थान पर प्रजाओं में धर्मप्रचार के लिए स्थापित कराया था। स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ शिलाभिलेख सुदर्शन झील के वर्षाकाल में बाढ़ से टूटे बाँध के चक्रपालित द्वारा पुनर्निर्माण की स्मृति में उत्कीर्ण कराया गया था। रुद्रदामन के गिरनार स्थित वर्तमान शिलालेख का विषय भी सुदर्शन तालाब का पुनः संस्कार ही है। इससे पता चलता है कि इस क्षेत्र में सुदर्शन झील का विशेष महत्व था। इस अभिलेख में स्पष्ट वर्णन है कि यह तालाब मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त ने अपने प्रान्तीय शासक वैश्य पुष्यगुप्त की देख रेख में तैयार कराया था। मौर्यवंशी सम्राट् अशोक के प्रान्तीय शासक यवनराज तुषास्फ ने इसे जल निकास की छोटी बड़ी प्रणालियों की राजोचित व्यवस्था से सम्पन्न किया। इससे यह भी पता चलता है कि सुराष्ट्र मौर्यवंशी सम्राटों के साम्राज्य का एक अंग था और सम्राट् अशोक के काल में वहाँ तुषास्फ नामक कोई यवन प्रान्तीय शासक के रूप में राज्य करता था। रुद्रदामन के शासनकाल में शक सम्वत् 72 के मार्गशीर्ष मास की कृष्ण प्रतिपदा को अतिवृष्टि के कारण जल थल एक हो गए। ऊर्जयत् पर्वत से निकलने वाली

सुवर्णसिकता और पलाशिनी आदि नदियों में भयंकर बाढ़ और तेज तूफान के कारण तालाब का बाँध समुचित बचाव कार्य कर दिए जाने पर भी बह गया और चार सौ बीस हाथ लम्बी, इतनी ही चौड़ी और पचहत्तर हाथ गहरी दरार पड़ गई, जिसके कारण जल निकल जाने से तालाब मरुस्थल की तरह कुरुप हो गया। जलाभाव के कारण प्रजाओं में हाहाकार मच गया। दरार की विशालता को देखकर राजा के मन्त्री और कार्य प्रशासक उसके पुनर्निर्माण के प्रति हतोत्साहित हो गए। परन्तु रुद्रदामन ने प्रजाओं के हित के लिए और सम्पूर्ण आनर्त और सुराष्ट्र के पालनार्थ पल्हवजातीय कुलैप के पुत्र प्रान्तीय शासक सुविशाख की सहायता से इस बाँध को प्रजाओं से कर, बेगार, उपहार आदि लिए बिना ही तिगुनी दृढ़ता और विस्तार के साथ पुनः बँधवा दिया। इस शिलालेख से रुद्रदामन के राज्य विस्तार, शासन–प्रबन्ध और व्यक्तित्व पर विशेष प्रकाश पड़ता है।

10.6 रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख का साहित्यिक महत्व

रुद्रदामन के गिरनार शिलालेख का विशेष साहित्यिक महत्व है। यह अभिलेख अलंकृत गद्यकाव्य की शैली में उपनिबद्ध हुआ है। एक ओर यह अभिलेख जहाँ अपने आप में एक अलंकृत गद्य रचना का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरी ओर तात्कालिक सुन्दर काव्य रचना की विविध विशेषताओं का भी उल्लेख करता है।

इस लघु गद्य खण्ड की रचना में कवि गद्य काव्य की सभी विशेषताओं का सम्पादन और नियमों का पालन करता प्रतीत होता है। गद्य रचना की परम्परा के अनुसार इसमें लम्बे वाक्यों और बड़े–बड़े समासों का प्रयोग किया गया है और क्रिया–रूपों को विशेष महत्व नहीं दिया गया। कुल मिलाकर छः वाक्य हैं, जिनमें पाँचवाँ वाक्य सबसे लम्बा है। तीसरा और चौथा ये दो वाक्य अन्त की ओर टूटे हुए हैं। इसलिए इनकी क्रियाओं का कुछ पता नहीं चलता। शेष चार वाक्यों के अन्त में क्रमशः **'वर्तते'** और **'आसीत्'** इन दो तिङ्गन्त क्रियाओं का प्रयोग हुआ है, और पाँचवे तथा छठे वाक्यों के अन्त में क्रमशः **'कारितम'** और **'अनुष्ठितम्'** इन दो कृदन्त क्रियायों का। इस प्रकार यहाँ दो ही तिङन्त क्रियाएँ हैं। यदि कवि ने अन्त की ओर टूटे हुए दो वाक्यों में भी तिङन्त क्रियाओं का प्रयोग किया हो तो कुल मिलाकर चार तिङन्त क्रियाएँ मानी जा सकतीं हैं। इतने बड़े गद्य खण्ड के लिए तिङन्त क्रियाओं की यह संख्या बहुत थोड़ी है। किन्तु संस्कृत गद्य काव्य के अध्येताओं के लिए तिङन्त क्रियाओं का प्रयोग किया हो, तो कुल मिलाकर चार तिङन्त क्रियाओं की यह संख्या बहुत थोडी है। किन्तु संस्कृत गद्य काव्य के अध्येताओं के लिए तिङन्त क्रियाओं का यह अभाव कोई आश्चर्य की बात नहीं। व्याकरण ग्रन्थों में तिङन्त प्रकरण, जहाँ सबसे अधिक लम्बा, पेचीदा, और क्लेशपूर्ण है, वहाँ प्रबन्धों में तिङन्त क्रिया के दर्शन ईद के चाँद की तरह सौभाग्य से ही होते हैं, और वे भी अस्, भू, वृत्, कृत इत्यादि सामान्य क्रियाओं के ही।

ओजगुण से युक्त समास बहुला शैली को दण्डी ने गद्य का प्राण माना है (**ओजः समासभूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्**) काव्यादर्श। ऐसी समासबहुला गद्य–शैली के दर्शन हमें सर्वप्रथम रुद्रदामन के इस अभिलेख में ही होते हैं। इस अभिलेख मे समस्त पदों की संख्या साधारण पदों से कहीं अधिक है। यद्यपि कुछ समस्त पद अधिक लम्बे हैं, तथापि अधिकतर छोटे और प्रवाहपूर्ण हैं और वैदर्भी रीति का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वर्ण्य विषय के अनुकूल कहीं–कहीं गौड़ी रीति का प्रयोग भी किया गया है। **'गिरिशिखरतरुतटाट्टलकोपतल्पद्वारशरणोच्छ्रय–विध्वंसिना'** इसका एक अच्छा उदाहरण है। इसमें ऊर्जयत् पर्वत से निकलने वाली नदियों की बाढ़ और भयंकर तूफान से

पहाड़ के शिखरों, पेड़ों तथा अट्टालिकाओं आदि के विध्वंस का ओजोमय वर्णन और सजीव चित्रण है। अलंकारों में शाब्दिक और आर्थिक दोनों प्रकार के अलंकारों का प्रयोग मिलता है। शब्दालंकारों में यमक और अनुप्रास का प्रयोग हुआ है। '**अर्थकामविषयाणां विषयाणाम्**' यमक का सुन्दर उदाहरण है। '**गिरिनगराद् और सृष्टवृष्टिना**' छेकानुप्रसाद के अच्छे उदाहरण हैं, जहाँ प्रथम में ग् और र् की और दूसरे में ष् और ट् व्यंजनों की क्रमशः आवृत्ति हुई है। '**अभ्यस्तनाम्नो रुद्रदाम्नो, अविधेयानां यौधेयानाम् दानमानानवमानशीलेन स्थूललक्षेण, अनेकमाल्यप्राप्तदाम्ना महाक्षत्रपेन रुद्रदाम्ना, आर्येणा हार्येण, न्यायाद्यानां विद्यानाम्**' आदि अन्त्यानुप्रास के उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। '**गिरिशिखरतरतट्टटालकोप तल्पद्वारशरणोच्छ्रय विध्वंसिना, क्षिप्ताश्मवृक्षगुल्म**'

10.7 रुद्रदामन का उत्कीर्ण जूनागढ़ शिलालेख

1. सिद्धं (।।) इदं तडाकं सुदर्शनं गिरिनगरादपि सम (न्तात्)।.....(मृत्ति) कोपल–विस्तारायामोच्छ्रय–निःसन्धि–बद्ध–दृढ़–सर्व्व–पालीकत्वात्पव्वर्त–पा
2. द–प्प्रतिस्पर्द्धि सुश्लिष्ट–(बन्धं).....मवजातेनाकृत्त्रिमेण सेतु बन्धेनोपन्नं सुप्प्रति–विहित–प्प्रणाली–परीवाह–
3. मीढ़–विधानं च त्रि–स्कन्ध.....नादिभिरनुग्रहैर्महत्युपचये वर्तते। तदिदं राज्ञो महाक्षत्रपस्य सुगृही
4. त–नाम्नः स्वामि–चष्टनस्यः पौत्र स्य राज्ञः महाक्षत्रपस्य सुगृहीतनाम्नः स्वामिजयदाम्नः पुत्रस्य राज्ञो महाक्षत्रपस्य गुरुभिरभ्यस्तनाम्नो रुद्रादाम्नो वर्षे द्वि–सप्ततितमे
5. मार्ग्गशीर्ष–बहुल–प्र (तिपदि)....(निः) सृष्टवृष्टिना पर्ज्जन्येन एकार्णवभूतायामिव पृथिव्यां कृतायां गिरेरूर्जयतः सुवर्णसिकता
6. पलाशिनी–प्रभृतीनां नदीनां अति सेतुम.....(य) माणानुरूप–प्रतिकारमपि गिरि–शिखर–तरु–तटाट्टलकोपतल्प–द्वार शरणोच्छ्रय–विध्वंसिना युग निधन सदृ
7. श–परम–घोर–वेगेन वायुना प्रमथित–सलिल–विक्षिप्त–जर्ज्जरीकृताव (दीर्ण) ..... क्षिप्ताश्म–वृक्ष–गुल्म–लता–प्रतान आनदी तलादित्युद्घाटितमासीत (।) चत्वारि हस्तशतानि वीशदुत्तराण्यायतेन एतावन्त्येव विस्तीर्णेन
8. पंच–सप्तति–हस्तानवगाढेन भेदेन निससृत सर्व्व–तोयं मरु–धन्वकल्पमतिभृशं दु (र्दर्शनमासीत्) (।) .....(स्या) र्थे मौर्यस्य राज्ञः चन्द्रगुप्तस्य राष्ट्रियेण (वै) श्येन पुष्पगुप्तेन कारितं अशोकस्य मौर्यस्य (कृ) तेयवन–राजेन तुषास्फेनाधिष्ठाय
9. प्रणालीभिरल (ं) कृत (ं) (।) तत्कारितया च राजानुरूप कृत विधानया तस्मिं (मेदे) दृष्टया प्रनाड्या वि (स्तृ) त –से (तु) णा आ गर्भात्प्रभृत्यविहित समुदि (त) राज–लक्ष्मी––धारणा–गुणतस्सर्व्व वर्णैरभिगम्य रक्षणार्थ पतित्वे वृतने (आ) प्राणोच्छ्वासात्पुरुषवध निवृत्ति–कृत
10. सत्य प्रतिज्ञेन अन्य (त्र) संग्रामेष्वभिमुखागत–सदृश–शत्रु–प्रहरण–वितरणत्वाविगुण–रिपु..... (धृ) त करुण्येन स्वयमभिगतजनपद– प्रणिपतितायुष–शरददेन दस्यु–व्याल–मृग–रोगादिभिरनुपसृष्ट–पूर्व्व–नगर–निगम–
11. जनपदानां स्व–वीर्य्यार्जितानामनुरक्त–सर्व्व–प्रकृतीनां पूर्व्वापराकरवन्त्यनूप–

नीवृदानर्त्त–सुराष्ट्र–श्वभ्र–मरु–कच्छ–सिन्धु सौवीर–कुकुरापरांत–निषदादीनां समग्राणां तत्प्रभावाद्य (थावत्प्राप्तधर्मार्थं)काम–विषयाणां पतिना सर्व्व–क्षत्राविष्कृत

12. वीर–शब्द–जा (तो) त्सेकाविधेयानां यौधेयानां प्रसह्योत्सादकेन दक्षिणापथ–पतेस्सातकर्णेर्द्विरपि निर्व्याजमवजित्यावजित्यसम्बन्धाविदूरतया अनुत्सादनात्प्राप्त–यशसा वा... (प्रा) प्तविजयेन भ्रष्ट–राज–प्रतिष्ठापकेन यथार्त्थ–हस्तो

13. च्छ्रयार्जितोर्जित–धर्मानुरागेण शब्दार्त्थ–गान्धर्व्व–न्यायाद्यानां विद्यानां महतीनां पारण–धारण–विज्ञान–प्रयोगावाप्त–विपुल–कीर्त्तिना–तुरग–गज–रथचर्य्यासि–चर्म–नियुद्धाद्या–ति–पर–बल–लाघव–सौष्ठव–क्रियेण अहरहद्दीन–मानान

14. वमान–शीलेन स्थूल–लक्षेण यथावत्प्राप्तैर्बलिशुल्क–भागैः कनक–रजत–वज्र–वैडूर्य–रत्नोपचय–विष्यन्दमानकोशेन–स्फुट–लघु–मधुर–चित्र–कान्त–शब्द–समयोद ारालंकृत–गद्य–पद्य (काव्य–विधान–प्रवीणे) न प्रमाण–मानोन्मान–स्वर–गति–वर्ण्ण–सार–सत्वादिभिः

15. परम–लक्षण–व्यंजनैरुपेत–कान्त–मूर्त्तिना स्वयंमधिगत–महाक्षत्रपनाम्ना नरेन्द्र–कन्या–स्वयंवरोनेक–माल्य–प्राप्त–दाम्ना महाक्षत्रपेण रुद्रदाम्ना वर्ष सहस्त्राय गो–ब्राह्मण.....(हितार्थं) धर्म्म–कीर्ति–वृद्ध्यर्थं च अपीडयित्वा कर–विष्टि–

16. प्रणय–क्रियाभिः पौर–जानपदं जनं स्वस्मारत्कोशान महता धनौधेन अनतिमहता च कालेन त्रिगुण दृढ़तर–विस्तारायामां सेतुं विधा (य स) र्व्व–त (टे)... (सु) दर्शनतरं कारितमिति (।) (अ) स्मिन्नर्त्थे.....

17. (च) महाक्षत्रपस्य मतिसचिव कर्मसचिवैरमात्य–गुण समुद्युक्तैरप्यतिमहत्वाद् भेदस्यानुत्साह विमुख–मतिभिः प्रत्याख्यातारंभं

18. पुनः सेतु–बन्ध–नैराश्याद् हाहाभूतासु प्रजासु इहाधिष्ठाने पौरजानपद–जनानुग्रहार्थं पार्थिवेन कृत्स्नानामानर्त्त–सुराष्ट्रानां पालनार्त्थन्नियुक्तेन

19. पह्लवेन कुलैप–पुत्रेणामात्येन सुविशाखेन यथावदर्थ–धर्मव्यवहार दर्शनैरनुरागमर्भिवर्द्धयता शक्तेन दान्तेनाचपलेनाविस्मितेनार्य्येण

20. स्वधिष्ठिता धर्म–कीर्ति–यशांसि भर्तुरभिवर्द्धयतानुष्ठतमिति।

1. सिद्धम्.....उपचये वर्त्तते।

सिद्धम्। इदं तडाकं सुदर्शनं गिरिनगरात् अविदूरं मृत्तिका–उपल–विस्तार–आयाम–उच्छ्रय–निःसन्धिबद्ध–दृढ़–सर्व–पालीकत्वात् पर्वत–पाद–प्रतिस्पर्धि सुश्लिष्ट–बन्धं अभिजातेन अकृत्रिमेन सेतुबन्धेन उपन्नं सुप्रतिविहित–प्रणाली– परीवाह–मीढ–विधानं च त्रिस्कन्ध–(न) आदिभिः अनुग्रहैः महति–उपचये वर्त्तते।

अनुवाद– सुदर्शन नामक यह तालाब (गिरनार) गिरीनगर के निकट मिट्टी और पत्थरों की चौड़ी, लम्बी और ऊँची, बिना जोड़ के बंधी हुई, सभी दृढ़ पंक्तियों वाला होने के कारण, पर्वत के चरणों की प्रतिस्पर्धा करने वाला, सुश्लिष्ट बाँध वाला, उत्तम और अकृत्रिम सेतुबंध से युक्त, समुचित रूप से बनी नालियों, जल निकास एवं मलबे के निकास के प्रावधान वाला, तीन भागों में (विभाजित) बचाव प्रबन्धों के कारण (यह सुदर्शन तालाब) उत्तम दशा में है।

2. तदिदं.....आसीत्।

तद् इदं राज्ञः महाक्षत्रपस्य सुगृहीनाम्नः स्वामिचष्टनपौत्रस्य राज्ञः क्षत्रपस्य जयदाम्नः पुत्रस्य राज्ञः महाक्षत्रपस्य गुरुभिः अभ्यस्तनाम्नः रुद्रदाम्नः वर्षे द्विसप्तेतितमे 702

मार्गशीर्षबहुल–प्रतिपदायां.....सृष्टवृष्टिना पर्जन्येन एकार्णव–भूतायाम् इव पृथिव्यां कृतायां गिरेः ऊर्जयतः सुवर्ण–सिकता–पलाशिनी–प्रभृतीनां नदीनाम् अतिमात्रोद्वृत्तैः वेगैः सेतुं क्रियमाणं अनुरूप–प्रतिकारम् अपि गिरिशिखर तरु–तट–अट्टालक– उपतल्प–शरणोच्छ्रय–विध्वंसिना युग–निधन–सदृश–परम–घोर–वेगेन वायुना प्रमथित– सलिल–विक्षिप्त–जर्ज्जरीकृत–अवयवं....क्षिप्त–अश्म–वृक्ष–गुल्मलताप्रतानं आ नदीतलात् इति उद्घाटितम् आसीत्।

अनुवाद– वह यह (तडाग) राजा महाक्षत्रप प्रातः स्मरणीय नाम वाले स्वामी चष्टन के पौत्र, राजा क्षत्रप जयदामन के पुत्र, राजा महाक्षत्रप, गुरुजनों द्वारा बहुचर्चित नाम वाले रुद्रदामन के 72 वें (बहत्तरवें) वर्ष में, मार्गशीर्ष मास की कृष्णप्रतिपदा को (घनघोर) वर्षा को छोड़ने वाले मेघ के द्वारा पृथ्वी को मानो एक समुद्र बना दिए जाने पर, ऊर्जयत् पर्वत से (निकलने वाली) सुवर्णसिकता और पलाशिनी आदि नदियों के बहुत अधिक बड़े हुए (जल के) वेगों से बांध को, अनुरूप प्रतिकार किए जाने पर भी, प्रलय सदृश परम घोर वेग वाले वायु के द्वारा अलोडित जल से उखाड़े तथा जर्जर किए कलेवर वाला, बिखरे हुए पत्थरों, वृक्षों, झाड़ियों और लताप्रतानों वाला नदी के तलभाग तक उखाड़ दिया गया था।

3. चत्वारि.....आसीत्।

चत्वारि हस्तशतानि वीशत् (विंशत्) उत्तराणि आयतनेन एतावन्ति एवं विस्तीर्णेन पंचसप्तति–हस्त–अनवगाढेन भेदेन निःसृतसर्वतोयं मरुधन्वकल्पम् अतिभृशं दुर्दुर्शनम् आसीत्।

अनुवाद–बीस ऊपर चार सौ हाथ लंबे, इतने ही (हाथ) चौड़े 75 हाथ गहरे कटाव के कारण निकले हुए सारे जल वाला (यह सुदर्शन तालाब) मरुस्थल के समान अत्यंत दुर्दर्शन हो गया।

4. (तदिदं जनपद) स्यार्थे.....कारितमासीत्।

(तद् इदं जनपद) स्य अर्थे मौर्यस्य राज्ञः चन्द्रगुप्तस्य राष्ट्रियेण वैश्येन पुष्पगुप्तेन कारितम् अशोकस्य मौर्यस्य कृते यवनराजेन तुषास्फेन अधिष्ठाय प्रणालिभिः अलङ्कृतं। तत् कारितया च राजा–अनुरूप–कृतविधानया तस्मिन् भेदे दृष्टया प्रणाड्या विस्तृतसेतुः। णा आ गर्भात् प्रभृति अविहत–समुदित–राज–लक्ष्मी–धारणा–गुणतः सर्ववर्णैः अभिगम्य रक्षणार्थं पतित्वे वृतेन आप्राणोच्छ्वासात् पुरुष–वध–निवृत्ति–कृतप्रतिज्ञेन अन्यत्र संग्रोमेषु अभिमुखागत सदृश–शत्रु–प्रहरण–वितरणत्वाविगुण–रिपु–धृत–कारूण्येन स्वयम् अभिगत–जनपद–प्रणिपतितायुष–शरणदेनदस्यु–व्याल–मृग– रोगादिभिःअनुपसृष्ट–पूर्व–नगर–निगम–जनपदानां–स्व–वीर्यार्जितानाम्–अनुरक्त–सर्व–प्रकृतीनांपूर्वापकराकरावन्त्यनूप–नीवृत्–आनर्त्त–सुराष्ट्र–श्वभ्र–मरु–कच्छ–सिन्धु–सौवीर–कुकुरापरान्त–निषादादीनां समग्राणां तत् प्रभावात् यथावत् प्राप्तधर्मार्थकामविषयाणां पतिना (पत्या) सर्व–क्षत्राविष्कृत–वीर–शब्द–जातोत्सेकाविधेयानां यौधेयानां प्रसृह्य उत्सादकेन दक्षिणपथपतेः सातकर्णेः द्विः अपि निर्व्याजम् अवजित्य सम्बन्ध अविदूरतया अनुत्सादनात् प्राप्तयशसा वा..... (प्रा) प्त–विजयेन भ्रष्ट–राज–प्रतिष्ठापकेन यथार्थ–हस्तोच्छ्रयार्जितोर्जित–धर्मानुरागेण शब्दार्थ–गान्धर्व–न्यायाद्यानां विद्यानां महतीनां पारण–धारण–विज्ञान–प्रयोगावाप्तविपुल–कीर्त्तिना तुरग–राज–रथचर्यासि–चर्म–नियुद्धाद्याः....ति–पर–बल–लाघव–सौष्ठव–क्रियेण अहः अहः–दान–मानानवमान–शीलेन स्थूल–लक्षेण यथावत् प्राप्तैःबलिशुल्क–भागैःकनक–रजत–वज्र–वैडूर्य–रत्नोपचय–विष्यन्दमान–कोशेनस्फुट–लघु–मधुर–चित्र–कान्त–शब्द–समयोदार–अलंकृत–गद्य–पद्य (काव्य–विधान–प्रवीणे)नप्रमाण–मानोन्मान–स्वर–गति–वर्ण–सार–सत्वादिभिः परम–

लक्षण–व्यंजनैः उपेत–कान्त–मूर्त्तिना स्वयम् अधिगत–महाक्षत्रप–नाम्ना–नरेन्द्र–कन्या–स्वयंवर अनेक–माल्य–प्राप्त–दाम्ना महाक्षत्रपेण रूद्रदाम्ना वर्षसहस्त्राय गो–ब्रा (ह्मण)...हितार्थं धर्म–कीर्ति–वृद्धयर्थं च अपीडयित्वा कर–विष्टि–प्रणय–क्रियाभिः पौरजानपदं जनं स्वस्मात् कोशात् महता धनौघेन अनतिमहता च कालेन त्रिगुण–दृढ़तर–विस्तारायामं सेतुं विधाय सर्वतटे सुदर्शनतरं कारितम इति।

अनुवाद–वह यह (तालाब) जनपद के लिए मौर्यवंशी राजा चन्द्रगुप्त के प्रान्तीय शासक वैश्य पुष्यगुप्त के द्वारा बनवाया गया। मौर्यवंशी अशोक के लिए यवनराज तुषास्फ के द्वारा (सुराष्ट्र के प्रांतीय शासक के पद पर) आसीन होकर (जल निकास की) नालियों से अलंकृत किया हुआ और उसी के द्वारा बनवाई हुई राजोचित व्यवस्था वाली, उस दरार में देखी गई प्रणाली से विस्तृत बांध....(का निर्माण किया गया था)....गर्भ (में आने के समय) से लेकर अबाध रूप से प्राप्त लक्ष्मी के धारण करने वाले (उसके) गुणों के कारण सभी वर्णों के द्वारा पास जाकर रक्षा के लिए राजा के पद पर वरण किए हुए, संग्रामों को छोड़कर, मृत्यु पर्यन्त पुरुषों के वध से स्वयं को दूर रखने की सत्य प्रतिज्ञा वाले, सम्मुख आए हुए बराबर के शत्रु पर प्रहार करने और विशेष गुणों से हीन शत्रु..... धारण की हुई करुणा वाले, स्वयं (शरण में) आए हुए जनपदों और चरणों में पड़े हुए (जनों को) आयु और शरण प्रदान करने वाले, डाकुओं, हिंसक जन्तुओं, वन्य पशुओं और रोगादि से पूर्व अनाक्रांत नगरों, वणिक्पथों और जनपदों वाले, अपने पराक्रम से जीते हुए। अनुरागपूर्ण समस्त प्रजा वाले, पूर्वी आकर और पश्चिमी अवन्ति, अनूपदेश, आनर्त, सुराष्ट्र, श्वभ्र, मारवाड़, कच्छ, सिंधु, सौवीर, कुकुर, अपरांत, निषाद आदि उसके प्रभाव से यथावत् धर्म, अर्थ और कामादि विषयों को प्राप्त होने वाले समग्र देशों के स्वामी, समस्तक्षत्रियों में प्रकट किए हुए (अपने) वीर शब्द से उत्पन्न गर्व के कारण किसी के भी वश में न होने वाले यौधेयों को बलपूर्वक उखाड़ फेंकने वाले, दक्षिणापथ के स्वामी को बिना किसी छल कपट के दो बार हरा हरा कर भी सम्बन्ध की निकटता के कारण न उखाड़ फेंकने के कारण कीर्ति को प्राप्त करने वाले, विजय प्राप्त करने वाले, (राज्य से) भ्रष्ट राजाओं को (पुनः उनके राज्य) स्थापित करने वाले, यथार्थ रूप से हाथ उठाकर (निर्णय देने से) अर्जित किए धर्म के महान अनुराग वाले, व्याकरण, अर्थशास्त्र, संगीत, न्याय इत्यादि महाविद्याओं में पारंगत होने, धारण करने, मनन करने और व्यवहार में लाने से प्राप्त हुए विपुल कीर्ति वाले, घोड़े, हाथियों और रथों के प्रयोग, तलवार, ढाल और द्वंद युद्ध आदि (में प्रदर्शित) परमबल, लाघव और उत्तम क्रिया वाले, दिन प्रतिदिन दान व मान में श्रद्धा के शील वाले, अत्यधिक दान देने वाले, समुचित रूप से प्राप्त मालगुजारी व चुंगी के भागों से सोने, चांदी, हीरों, वैदूर्यमणि और रत्नों की राशियों से आप्लावित कोश वाले स्पष्ट, लघु, मधुर, रोचक और कांत शब्द संकेतों से उदार और अलंकृत गद्य पद्य से युक्त (काव्य के प्रयोग में दक्ष) चौड़ाई, लंबाई, ऊंचाई, स्वर, चाल, रंग, बल, सत्त्व आदि उत्तम (शारीरिक) लक्षणों (और) चिन्हों से युक्त सुंदर शरीर वाले, स्वयं (अपने पराक्रम से) महाक्षत्रप की उपाधि को धारण करने वाले, राजाओ की कन्याओं के स्वयंवरों में अनेक लड़ियों वाली जयमालाओं को प्राप्त करने वाले, महाक्षत्रप रुद्रदामन के द्वारा हजारों वर्षों के लिए, गायों और ब्राह्मणों के लिए, धर्म और कीर्त्ति की वृद्धि के लिए, नगरों और जनपदों के लोगों को कर, बेगार और प्रणयोपहार की क्रियाओं से पीड़ित किए बिना अपने कोश से, विपुल धनराशि के द्वारा और थोड़े समय में, तीन गुणा अधिक दृढ़, चौड़े और लंबे बांध को बनवाकर सभी तटों पर और अधिक दर्शनीय बनवा दिया।

5. अस्मिन् अर्थे.....अनुष्ठितम् इति।

अस्मिन् अर्थे.... (च) महाक्षत्रपस्य मतिसचिवकर्मसचिवैः अमात्य गुण समुद्युक्तैः अपि अतिमहत्त्वात् भेदस्य–अनुत्साह–विमुखमतिभिः प्रत्याख्यातारंभं पुनः सेतु–बन्ध–नैराश्यात् हा हा भूतासु प्रजासु इह अधिष्ठाने पौर–जनपद–जन–अनुग्रहार्थं पार्थिवेन कृत्स्नानाम् आनर्त्त–सुराष्ट्रानां पालनार्थं नियुक्तेन पह्लवेन कुलैप–पुत्रेण अमात्येन सुविशाखेन यथावत् अर्थ–धर्म–व्यवहार–दर्शनैः अनुरागम् अभिवर्द्धयता शक्तेन, दान्तेन, अचपलेन, अविस्मितेन, आर्येण अहार्येण स्वधितिष्ठता–धर्म–कीर्ति–यशांसि भर्तुः अभिवर्द्धयता अनुष्ठितम् इति।

अनुवाद–इस विषय में महाक्षत्रप के मतिसचिव और कर्मसचिवों के द्वारा अमात्य गुणों से युक्त होते हुए भी दरार के बहुत बड़ी होने के कारण, उत्साहहीनता से विमुख मति वाले, परित्यक्त पुनर्निर्माण के प्रयत्नवाला (यह बांध) सेतु के पुनः बंधने के प्रति निराशा से प्रजाओं में हाहाकार मच जाने पर, यहाँ शासन में नगर निवासियों और जनपद के लोगों के अनुग्रह के लिए राजा के द्वारा समस्त आनर्त्त और सुराष्ट्र के पालन के लिए नियुक्त किए हुए पह्लव जातीय, कुलैप के पुत्र, अमात्य सुविशाख के द्वारा, समुचित रूप से अर्थ, धर्म और व्यवहार की देखभाल के कारण (प्रजा के) अनुराग को बढ़ाने वाले, शक्ति संपन्न, जितेन्द्रिय चंचलतारहित निरभिमानी, उत्तम आचरण वाले (किसी भी परिस्थिति में) कर्तव्य च्युत न होने वाले, भली प्रकार शासन करने वाले, स्वामी के धर्म, कीर्त्ति और यश को बढ़ाने वाले (अमात्य सुविशाख के द्वारा) (यह बांध) बनवाया गया।

बोध प्रश्न–1

1. निम्नलिखित प्रश्नों के ठीक उत्तरों पर सही (√) का चिन्ह लगाइये।

I. रुद्रदामन कहाँ का महाक्षत्रप था। (उज्जैन/दिल्ली)

II. क्षत्रप शब्द का अर्थ क्या होता है। (प्रांत रक्षक/राजा)

III. क्षत्रप प्रथम उपाधि किसे दी गयी थी। (चष्टन/रुद्रदामन)

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

I. क्षत्रप वंश का प्रथम शासक .....था। (यश मतिक/रुद्रदामन)

II. सुदर्शन झील .....बनवाई थी। (सम्राटचन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक/यश मतिक तथा रुद्रदामन)

III. सुदर्शन झील का पुनरुद्धार .....करवाया है। (रुद्रदामन/यशमतिक)

बोध प्रश्न–2

1. रुद्रदामन की शासनव्यवस्था के बारें में लिखिए।

.....

.....

2. रुद्रदामन की जूनागढ़ शिलालेख का परिचय दीजिए।

.....

.....

अभ्यास प्रश्न 1

रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख का विस्तृत वर्णन कीजिए।

10.8 सारांश

शक क्षत्रपों में रुद्रदामन् का महत्वपूर्ण स्थान है। जूनागढ़ अभिलेख की तिथि **'द्विसप्ततितमे'** अर्थात् वर्ष 72 दी गयी है। ईसवी संवत् से समीकृत करने पर तिथि 150 ई. मानी जाती है। रुद्रदामन उज्जैन का महाक्षत्र था। क्षत्रप शब्द फारसी के क्षत्रपावन शब्द का रूपान्तर प्रतीत होता है। रुद्रदामन एक शक्तिशाली एवं प्रतापी राजा था। उसने अनेक राजाओं पर विजय प्राप्त की थी। अभिलेख में बताया गया है कि सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक के समय में एक विशाल झील बनवाई गई थी। यह झील सुदर्शन के नाम से विख्यात थी। इस इकाई में रुद्रदामन का जीवनवृत्त, एवं उसकी विजययात्रा एवं राजविस्तार, शासनव्यवस्था, जूनागढ़ शिलालेख का परिचय उत्कीर्ण जूनागढ़ शिलालेख एवं उसके साहित्यिक महत्व का अध्ययन किया गया।

10.9 शब्दावली

अमात्य – मंत्री

प्रवीण – कुशल

जितेन्द्रिय – इन्द्रियों को जीतने वाला

प्रणाली – रीति

कीर्ति – यशस्वी

प्रतिर्स्पधा – होड़

10.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- अभिलेखमंजूषा, रणजीत सिंह सैनी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन दिल्ली–2000
- उत्कीर्णलेखपंचकम्, झा बन्धु, वाराणसी, 1968
- उत्कीर्णलेखस्तबकम्, जियालाल कम्बोज, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली
- भारतीय अभिलेख, एस.एस.राणा, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 1978
- भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशंकर, हीराचन्द ओझा, अजमेर, 1918
- प्राचीन भारतीय लिपिशास्त्र और अभिलेखिकी, नारायण, अवध किशोर एवं ठाकुरप्रसाद वर्मा, वाराणसी 1970
- भारतीय पुरालिपि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, राजबली पाण्डेय, 1978
- भारतीय पुरालिपि शास्त्र, ब्यूलर जार्ज, (हिन्दी अनु.) मंगलनाथ सिंह, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली 1966
- अक्षरकथा, मुले गुणाकर, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, दिल्ली 2003
- लेखनकथा का इतिहास (खण्ड 1–2), ईश्वरचन्द्र राही, हिन्दी संस्थान, लखनऊ, उ.प्र. 1983

- भारतीय पुरालिपि विद्या, डी.सी सरकार, (हिन्दी अनु.) कृष्णदत्त वाजपेयी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 1996
- भारतीय पुरालेखों का अध्ययन, शिवस्वरूप सहाय, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
- Selected Inscriptions (Vol.1) D.C.Sarkar, Calcutta, 1965
- Indian Chronlogy (Solar, Lunar and Planetary), Pillai, Swami Kannu & K.S. Ramchadran Asian Education Service 2003 Text Book of Indian Epigraphy, K. Satymurty, Lower Price Publication, Delhi 1992

10.11 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. (i) उज्जैन (ii) प्रांत रक्षक (iii) चष्टन
2. (i) यश मतिक (ii) सम्राट्चन्द्रगुप्त मौर्य तथा अशोक (iii) रुद्रदामन

बोध प्रश्न–2

1. इस अभिलेख में यह उल्लेख है कि राजा ने नगर और जनपदों के निवासियों के अनुग्रह तथा समस्त आनर्त और सुराष्ट्र के पालनार्थ पलहवजातीय कुलैप के पुत्र अमात्य सुविशाख को यहाँ (आनर्त और सुराष्ट्र) का राज्यपाल नियुक्त किया हुआ था, यह पता चलता है कि रुद्रदामन ने अपने राज्य को अनेक प्रान्तों में विभक्त किया हुआ था जो प्रान्तीय शासक के अधीन होते थे। शासन प्रबन्ध को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए उसने मन्त्रि सचिवों (मन्त्रियों) और कर्मसचिवों 'कार्यकारी पार्षद' की व्यवस्था की थी। रुद्रदामन की कर नीति भी अतिव्यवस्थित और उदार थी। अभिलेख में लिखित **यथावत् प्राप्तैः बलिशुल्कभागैः** से पता चलता है कि प्रजाओं से मालगुजारी और चुंगी आदि सामान्य कर ही प्राप्त करता था। सेतु के पुननिर्माण के लिए भी उसने प्रजाओं से विशेषकर, बेगार और उपहार आदि स्वीकार नहीं किए (**अपीडयित्वा करविष्टिप्रणयक्रियाभिः पौरजानपदं जनम्।**)
2. सुदर्शन नामक तालाब गिरिनगर के निकट चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रान्तीय शासक पुष्यगुप्त के द्वारा बनवाया गया था। सम्राट् अशोक के प्रतिनिधि शासक तुशासस्फ ने इसे प्रणालियों आदि की व्यवस्था से सम्पन्न किया। शक संवत् के 72 वें वर्ष में मार्गशीर्ष मास की कृष्ण प्रतिपदा को अत्यधिक वर्षा के कारण ऊर्जयत् पर्वत के निकलने वाली सुवर्णसिकता, पलाशिनी आदि नदियों में भयंकर बाढ़ आ जाने और तेज तूफान के कारण तालाब के बाँध में गहरी दरार पड़ गई। सारा जल निकल जाने के कारण सुदर्शन तालाब मरुस्थल की तरह दुर्दर्शन हो गया। सर्वगुण सम्पन्न, न्याय–प्रिय, कला और साहित्य प्रेमी, विजयशील रुद्रदामन ने प्रजाओं से कर, उपहार और बेगार लिए बिना तीन गुना मजबूती और विस्तार के साथ इस बाँध को पुनः बँधवा दिया। राजा के मत्रियों और कार्यसचिवों के हतोत्साह हो जाने के कारण प्रजाओं में हाहाकार मच जाने पर सुराष्ट्र और आनर्त के पालन के लिए अमात्य सुविशाख के द्वारा यह कार्य सम्पन्न हुआ।

   गिरनार पर्वत पर जितने भी अभिलेख उत्कीर्ण हुए हैं, वे सभी किसी न किसी रूप में सुदर्शन झील से अवश्य सम्बन्धित हैं।

अभ्यास प्रश्न–

इस प्रश्न का उत्तर विद्यार्थी स्वयं दे।